आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय एच.ओ. पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 21/07/2016 ● अंक - 592 ● तारीख - 22 जुलाई 2016, श्रावण कृष्ण - 03 ● शुक्रवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ - 02 ● मूल्य - 1 रूपया ● पृष्ठ - 01

सत्यसांई बाबा (अनमोल वचन)

अपने को महान उदात्त विचारों, भव्य कल्पनाओं अनिर्वचनीय ज्योति से भर लो।

नीति के श्लोक

अनुबंधानपक्षेत सानुबन्धेषु कर्मसु।
सम्प्रधार्य च कुर्वीत न वेगेन समाचरेत्॥

अर्थः–किसी प्रयोजन से किये गए कर्मों में पहले प्रयोजन को समझ लेना चाहिए। खूब सोच–विचार कर काम करना चाहिए, जल्दबाजी से किसी काम का आरम्भ नहीं करना चाहिए।

भक्ष्योत्तमप्रतिच्छन्नं मत्स्यो वडिशमायसम्।
लोभाभिपाती ग्रस्ते नानुबन्धमवेक्षते॥

अर्थः–मछली बढ़िया चारे से ढकी हुई लोहे की कांटी को लोभ में पड़कर निगल जाती है, उससे होने वाले परिणाम पर विचार नहीं करती।

क्या आपश्री जानते है?

भौंरे का शरीर बहुत भारी होता है। इसलिए विज्ञान के नियमों के अनुसार वह उड़ नहीं सकता। लेकिन भौंरे को इस बात का पता नहीं होता एवं वह यह मानता है की वह उड़ सकता है। इसलिए वह लगातार कोशिश करता जाता है और बार–बार असफल होने पर भी वह हार नहीं मानता क्योंकि वह यही सोचता है कि वह उड़ सकता है। आखिरकार भौंरा उड़ने में सफल हो ही जाता है।

अनमोल वचन

आपको अपने भीतर से ही विकास करना होता है। कोई आपको सिखा नहीं सकता, कोई आपको आध्यात्मिक नहीं बना सकता। आपको सिखाने वाला और कोई नहीं, सिर्फ आपकी आत्मा ही है।

जागें, उठें और तब तक न रुकें जब तक लक्ष्य तक न पहुंच जाएं।

–स्वामी विवेकानंद

कड़वे प्रवचन

सच्चा दोस्त वही है जो, आपकी गलतियों पर पर्दा डालने की बजाय निष्पक्ष रूप से अपना पक्ष प्रस्तुत करें। आपको आपकी बुराईयों से अवगत कराए।

हैदराबाद में शुरू हुआ देश का पहला ई–कोर्ट, ऐसे लगेंगी अदालतें

हैदराबाद हाई कोर्ट परिसर में देश का पहला ई–कोर्ट शुरू हो गया है। सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति मदन बी. लोकुर ने ई–कोर्ट का उद्घाटन करते हुए कहा कि तेलंगाना और आंध्र प्रदेश देश के ऐसे पहले दो राज्य हैं जिन्हें एकीकृत आपराधिक न्याय प्रणाली (आईसीजेएस) योजना के लिए चुना गया। दोनों राज्यों द्वारा इंजीनियरिंग क्षेत्र में की गई प्रगति का उल्लेख करते हुए न्यायमूर्ति लोकुर ने कहा कि आईसीजीएस एक ऐसी प्रणाली है जो पुलिस थानों, अदालतों, जेलों, अभियोजन पक्ष और फोरेंसिक साइंस प्रयोगशालाओं सभी को आपस में जोड़ देगी।

सुप्रीम कोर्ट की ई–कमिटी के अध्यक्ष और हैदराबाद में खुले देश के इस पहले ई–कोर्ट से बेहद प्रभावित न्यायमूर्ति लोकुर ने कहा कि 28 जुलाई को होने वाली बैठक में इसकी कार्यप्रणाली तय की जाएगी। उन्होंने कहा यह सिर्फ इसलिए ई–कोर्ट नहीं है, क्योंकि यह पूरी तरह कम्प्यूटरीकृत है, बल्कि इसलिए भी है, क्योंकि इसमें कागज की कहीं जरूरत ही नहीं पड़ेगी। हमने इसके काम करने के पूरे तरीके को कुछ देर समझा और इसे इस्तेमाल करने की कोशिश भी की। यह उपयोग में बेहद सरल है। मैं सभी न्यायाधीशों को इसके इस्तेमाल के लिए प्रोत्साहित करूँगा।

आत्मज्ञान की कुंजी मिल गई

संत एकनाथ के गुरु श्री जर्नादन स्वामी ने हिसाब–किताब का काम उन्हें सौंप रखा था।

गुरु सेवा समझकर एकनाथ निष्ठापूर्वक उस काम में लगे रहते थे। ऐसे ही एक दिन वे हिसाब मिला रहे थे। हिसाब एक पाई से चूक रहा था। बार–बार कोशिश करने पर भी मिलान नहीं हो पा रहा था। इस तरह रात के तीन पहर बीत गए। उधर गुरुदेव की नींद आचानक खुली तो पाया कि एकनाथ अपने बिस्तर पर नहीं हैं, बल्कि वहीं दूसरे कमरे में दीए की रोशनी में हिसाब मिला रहे हैं। संयोग से हिसाब उसी समय मिल भी गया। एकनाथ की खुशी का पारावार नहीं था। वह खुशी–खुशी ताली बजाकर आनंदित होने लगे। गुरुदेव के पूछने पर संत एकनाथ ने अपनी एक पाई की भूल मिलने पर खुश होने की बात बतलाई। सुन कर गुरु जनार्दन स्वामी बोले, 'एक पाई की भूल मिलने पर तुम इतने प्रसन्न हो रहे हो। इस संसार में मनुष्य न जाने कितनी गलतियाँ करता रहता है, अगर उसे यह बात ध्यान में आ जाए और वह उन सब को ठीक कर ले तो मालूम नहीं उसे तब कितना हर्ष होगा।' संत एकनाथ ने गुरु के मुख से ये शब्द क्या सुने, उन्हें मानो आत्मज्ञान की कुंजी मिल गई। गुरु के इस एक वाक्य ने जीवन भर उनका पथ प्रदर्शन किया।

जानिए बिल्व पत्र के बारे में महत्वपूर्ण बातें

भगवान शिव के पूजन में बिल्व पत्र का बहुत महत्व है। कहा जाता है कि बिल्व पत्र शिवजी को अतिप्रिय है। इसलिए भोलेनाथ को बिल्व पत्र अर्पित किया जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं बिल्व पत्र 6 महीने तक बासी नहीं माना जाता। इसे एक बार शिवलिंग पर चढ़ाने के बाद धोकर पुनः चढ़ाया जा सकता है। कई जगह शिवालयों में बिल्व पत्र उपलब्ध नहीं हो पाने पर इसके चूर्ण को चढ़ाने का विधान भी है।

बिल्व पत्र को औषधि के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। इसमें निहित इगेलिन व इगेलेनिन नामक क्षार–तत्व औषधीय गुणों से भरपूर होते हैं। यह चातुर्मास में उत्पन्न होने वाली विभिन्न स्वास्थ्य समस्याओं से भी निजात दिलाता है। यह गैस, कफ और अपचन की समस्या को दूर करने में सक्षम है। इसके अलावा यह कृमि और दुर्गंध की समस्या में भी फायदेमंद है। प्रतिदिन सात बिल्व पत्र खाकर पानी पीने से कई बीमारियों से छुटकारा मिलता है। इसी प्रकार यह एक औषधि के रूप में भी काम आता है। मधुमेह रोगियों के लिए बिल्व पत्र रामबाण इलाज है। मधुमेह होने पर पांच बिल्व पत्र, पाँच कालीमिर्च के साथ प्रतिदिन सुबह के समय खाने से अत्यधिक लाभ होता है। बिल्व पत्र के प्रतिदिन सेवन से गर्मी बढ़ने की समस्या भी समाप्त हो जाती है।

शिवलिंग पर प्रतिदिन बिल्व पत्र चढ़ाने से सभी समस्याएं दूर हो जाती हैं, भक्त को कभी भी पैसों की समस्या नहीं रहती है। बिल्व पत्र को तिजोरी में रखने से भी समृद्धि आती है। कुछ विशेष तिथियों पर बिल्व पत्र को तोड़ना वर्जित होता है। चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, द्वदशी, चतुर्दशी, अमावस्या, पूर्णिमा, संक्रांति पर बिल्व पत्र का नहीं तोड़ना चाहिए। सोमवार के दिन बिल्व पत्र को नहीं तोड़ना चाहिए, इसमें शिवजी का वास माना जाता है। इसके अलावा प्रतिदिन दोपहर के बाद भी बिल्व पत्र नहीं तोड़ना चाहिए।

ज्ञान का वारिस शिष्य होता है पुत्र नहीं

संत एकनाथ के आश्रम में बहुत से लोग ध्यान–साधना का अभ्यास करते थे। वहाँ एक किशोर पूरण भी था। उसकी मां विधवा थी, आश्रम में किसी तरह जीवन यापन कर रही थी। बेटे को पाल रही थी। पूरण से आश्रम के साधक मजाक में कहते थे कि पेट भरने के लिए अपनी माँ के साथ वह यहां टिका है। पूरण इस पर ध्यान नहीं देता था। वह संत एकनाथ का प्रवचन ध्यान से सुनता, उस पर अमल करने की कोशिश करता।

एकनाथ अपने इस किशोर शिष्य की सेवा और श्रम से प्रसन्न रहते। जीवन के अंतिम समय जब एकनाथ इस दुनिया से विदा ले रहे थे तो उन्होंने अपने शिष्यों को बुलाया और कहा कि मैं जो ग्रंथ लिख रहा था उसे पूरण से पूरा करवा लेना। शिष्यों ने कहा कि जब आपके पुत्र हरि पंडित जैसे बड़े विद्वान मौजूद हैं, फिर पूरण को यह काम क्यों सौंपना चाहिए ?

इस पर एकनाथ ने कहा, 'हरि को मैं पुत्र मानता हूं, शिष्य नहीं। ज्ञान का वारिस शिष्य/शिष्या होता/होती है, पुत्र/पुत्री नहीं। इसलिए मैंने ग्रंथ पूरा करने के लिए पूरण का चयन किया है।' कहते हैं एकनाथ जी के दिवंगत होने के बाद उनके पुत्र हरि ने उनका प्रसिद्ध ग्रंथ पूरा करने की कोशिश की, पर नहीं हुआ। अंततः उसे पूरण ने पूरा किया।

मानव मन के बोल

गतांक से आगे...

फिर कहा था, पुरू तेरी जवानी लौटा रहा हूँ, क्योंकि ये जवानी में भोग भोगने की इच्छा तो कभी समाप्त भी नहीं होती। जैसे अग्नि में घी डालने से अग्नि बढ़ती हैं। घी डालो तो अग्नि बढ़ेगी वैसे ही ज्यों–ज्यों भोगोगे ज्यादा इच्छा बढ़ेगी और शरीर बीमार हो जायेगा शरीर बूढ़ा हो जायेगा। शरीर में बीमारियाँ हो जायेगी। शरीर में वात बढ़ जायेगा।

काम, वात्त, कफ, लोभ अपारा।
क्रोध, पित, नित छाती झारा॥
मोह सकल व्याधीन का मूला।
ऐहि ते उपजत बहुशूला॥

इससे बहुत प्रकार के कष्ट पैदा हो जाते हैं, महाराज! हाँ रामजी–रामजी रटते रहों। प्रभु का काम करते रहो।

तो मैं आपको निवेदन कर रहा था 35 आदमियों को भोजन कराया। मुझे लगा अश्वमेद्य यज्ञ हो गया। आप कहोगे कैलाश जी इतनी ऊँची–ऊँची बातें कर लेते हो। क्या कहूँ मुझे तो भाव ही अच्छे लगते हैं, मुझे तो भावों से काम करना अच्छा लगता हैं। चतुराई चुल्हें पड़ी। यदि ईश्वर में प्रेम नहीं, रामजी में प्रेम नहीं, कृष्ण में प्रेम नहीं, शिवजी में प्रेम नहीं गरीबों में प्रेम नहीं, नर–नारायण में प्रेम नहीं तो ऐसी चतुराई का क्या फायदा? तभी नाविक ने कहा ना तैरना जानते हो के नहीं महाराज! आपने तो बोल दिया, अर्थशास्त्र नहीं जानता। आधी जिंदगी बेकार गई। अब ये नाव तूफान में फँस गई भँवर में फँस गई। मैं तो ये कूदा और तैरकर चला जाऊँगा, आप तैरना नहीं जानते आपकी तो पूरी जिंदगी बेकार गई और फिर कल्पना ने कहा पापा–पापा ये बच्चे कितने घाव ला रहे थे। कानों में घाव था, मक्खियाँ भिनभिना रही थी। कुछ पंक्तियाँ मैंने पहले भी कहा हैं। डॉ. पामेचा साहब को ले गये और बाद में अलसीगढ़ में गये लाला वो दिसम्बर जो क्रिसमस मास का हैं। वो दिसम्बर जो मैंने बचपन में पढ़ी थी कि पहला पत्थर वो मारे जिसने पाप नहीं किया हो।

बड़े दिनों का महिना सब धर्मों में भेदभाव नहीं मानना। बहुत लड़ाई हो गई, बहुत झगड़े हो गये। हिन्दु धर्म तो महान धर्म हैं। कल्याण जो गीताप्रेस गोरखपुर से निकला करता हैं और जो पुस्तके सतकथांक, कल्याण, गीताप्रेस, गोरखपुर से निकला हुआ, सतकथांक कल्याण का विशेषांक। उसमें भी ईसामसीह की जीवनी दी हुई हैं। ये मैंने बचपन में पढ़ी थी पहला पता।

सब धर्मो की एक ही बात।
प्यार बढ़ ाओ सबके साथ॥

अरे! कैलाश इतना जोर–जोर से क्यों बोलता हैं, धीरे से बोलेगा तो भी काम हो जायेगा। मौन का भी मैं, साधक बनूँगा। अभी तो मैं जब से जन्मा हूँ। कितनी जोर से रोया था। ये तो मुझे मालुम नहीं हैं, पाँच साल तक का याद नहीं हैं। पर वर्षों तक मैं दो सीढियाँ एक साथ चढ़ता चला गया। वर्षों तक ऐसा रहा, जब भी सीढ़ी उतरता चढ़ता था, इतनी जल्दी रहती थी कि दो सीढियाँ चढ़ता था। उतरते हुए दो सीढियाँ नहीं उतरता था एक–एक ही उतरता था।

कहते हैं चढ़ने से ज्यादा उतरने में खतरा हैं। उतरो तो ज्यादा सावधानी रखना हैं। चढ़ते हुए तो आदमी फिर भी सजग हो जायेगा। एक–एक कदम संभल कर चढ़ूं। ऊँची चढ़ाई हैं और कदम संभल कर चढ़ूं ऊँची चढ़ाई हैं और उतरते हुए कभी–कभी लापरवाह हो जाता हैं, अरे! अब क्या अब तो नीचे उतरना ही तो हैं। उपवास करने से ज्यादा सावधानी उपवास खोलने में रखनी चाहिए लाला। इसको कहते हैं, पालना करना।

तो अलसीगढ़ में गये, उसके पहले हमने सर्वे भी किया था, वहाँ जाके। आज भी मुझे मालुम हैं, वहां के सरपंच साहब का नाम उस समय मारू जी करके था अब तो उनका स्वर्गवास हो गया। कई सरपंच बदल गये। अब इन पंक्तियों को लिखवा रहा हूँ, तो अभी जो सरपंच साहब हैं।

क्रमशः आगले अंक में...

सम्पादकीय

आवागमन अबोध रूप से चल रहा था। सड़क के किनारे एक असहाय वृद्ध घायलावस्था में– प्रत्येक आने जाने वालों को याचना पूर्ण निगाहों से देख रहा था। लेकिन किसी ने वहाँ रुकने की हिम्मत नहीं उठाई। "यदि मैं यहाँ रुका तो लोग क्या समझेंगे ?क्या कहेंगे ?"

अन्ततः एक कार वाले सज्जन ने उन्हें देखा, कार धीमी की और कुछ आगे जाकर रुक गए। उन्होंने सोचा – "और भी तो लोग इधर से आ – जा रहे हैं। मैं ही क्यों ?" लेकिन अन्तर्द्वन्द्व चला – "उस वृद्ध को तत्काल सहायता की आवश्यकता है।"

"लेकिन मैंने कौनसा उसकी सहायता का ठेका ले रखा है।"

"कोई न कोई उसकी सहायता करेगा ही।"

"तो मैं क्यों फालतू का लफड़ा मोल लू – पुलिस, अस्पताल, कचहरी न जाने क्या हो।"

"लेकिन मानव ही मानव की सहायता नही करेगा तो कौन करेगा?"

"पर लोग क्या सोचेंगे – कि मैं इतना बड़ा, और वह इतना छोटा...... और फिर कौनसा मुझे सोने का तमगा मिल जायगा।"

"पगले यह कार्य प्रमाणपत्र की लालसा में नहीं किया जाता है। और असली प्रमाणपत्र देने वाला है, उसके पास तुम्हारी पूरी फाइल है। यूं ही निकल गए तो उस फाइल में एक लाल निशान लग जायगा, दूसरी अवस्था में, उसमें स्वर्णाक्षरों से लिखा प्रमाणपत्र रख दिया जायगा।"

सज्जन ने कार पीछे की, वृद्ध के पास जाकर रुके और बोले – "चलो बाबा, मेरे साथ आओ।"

आइये, आप और हम भी प्रयास करें कि ऐसा कोई अवसर हाथ से न जाने पाए। और हाँ, बिना अन्तर्द्वन्द्व के।

कड़वे प्रवचन

बच्चे हमारी आशाओं के केन्द्र होते है। बच्चों की आँखों में हम अपना भविष्य पढ़ते है। उनकी मुस्कान के सहारे ही कोई भी परिवार, समाज और राष्ट्र फलता–फुलता है। बच्चे को बच्चा इसलिए कहते है क्योंकि उसे बचाना पड़ता है। अथवा वह अभी तक बचा हुआ है। आज प्रत्येक घर हिंसक खिलौने का अजाबघर बना हुआ है। क्योंकि अब बच्चों को हिंसा के खिलौने ज्यादा पसंद आते है। पिस्तौल, टैंक, बन्दूक जैसे खिलौने आप बच्चों के हाथों में देख सकते हैं। इन खिलौने के सहारे उन्हें मरने–मारने का प्रशिक्षण दे रहे हैं। बाल पीढ़ी के मन में हिंसा घर कर रही है। यह किसी भी समाज और देश के लिए शुभ संकेत नहीं है। मैं कहता हूँ कि आप बच्चों को संभाल लीजिए, देश खुद ब खुद संभल जायेगा।

– मुनि संत श्री तरूण सागर जी महाराज

नामुमकिन कुछ भी नहीं

इस दुनिया में नामुमकिन कुछ भी नहीं" नामुमकिन" हमारा भ्रम या गलत मान्यता है जो आखिरकार गलत साबित होती है।

"हम वो सब कर सकते हैं, जो हम सोच सकते हैं और हम वो सब सोच सकते हैं जो आज तक हमने नहीं सोचा"

हम गलत धारणाएँ बना लेते हैं और हमें इसी कारण कोई कार्य मुश्किल या असंभव लगता है।

हम आज जो भी हैं, वह हमारी सोच का ही परिणाम है। हम जैसा सोचते हैं, वैसा बन जाते हैं – "असंभव" या "नामुमकिन" हमारी सोच का ही परिणाम है।

"हमारे साथ वैसा ही होता है, जैसा हम मानते हैं और विश्वास करते हैं।"

यह हम पर निर्भर करता है कि हमें अपनी ही सोच का गुलाम रहना है या स्वतंत्र। अगर हम मानते हैं और स्वयं पर यह विश्वास करते हैं कि हम कुछ भी कर सकते हैं तो हमारे लिए नामुमकिन कुछ भी नहीं।

चाणक्य नीति

दूसरों की गलतियों से सीखों, अपने ही ऊपर प्रयोग करके सीखने को तुम्हारी आयु कम पडेगी।

स्कूल ड्रेस व बेग का नि:शुल्क वितरण

नारायण सेवा संस्थान की ओर से संस्थान संस्थापक कैलाश मानव के सानिध्य में ग्रामीण क्षेत्रों के राजकीय प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पाठ्य सामग्री व स्कूल गणवेश का वितरण किया गया। निदेशक वदंना अग्रवाल ने बताया कि सलूम्बर के अदकालिया, कपुरावतों का बाड़ा, पिलुडा, अगाटिया, सेरिया, आजादपुरा, थडा, करेली व झाड़ोल के आसपास के क्षेत्र में स्कूली बच्चों को 800 गणवेश, 200 बेग, 360 बिस्किट के पैकेटों व निर्धन परिवारों को राशन वितरण किया गया।

इन प्रश्नों से बदल सकता है समस्याओं को देखने का नजरिया

हर व्यक्ति समस्या और परेशानी को अलग नजरिये से देखता है। आप भी दिक्कतों को अपने अनुसार देखते होंगे। यह ज्यादातर नकारात्मक ही होती है। आज कुछ ऐसे प्रश्नों के बारे में जानिए जिनके बारे में जानकारी होने से आप समस्याओं को अलग ही तरीके से देखने लगेंगे। जानिए इन प्रश्नों के बारे में.........

किसी चीज़ को लेकर आप अभी सकारात्मक और खुश रहना चाहते हैं तो वह क्या होगी ?

स्ट्रेस और निगेटिविटी से बाहर निकलने का एक ही हथियार है। वह है किसी ऐसी बात या व्यक्ति के बारे में सोचना जो सकारात्मक सोच रखता है और उसके साथ आप खुश रहते हैं। किस समस्या के लिए शुक्रगुज़ार हैं कि वे समस्या अभी नहीं घटी ?

कुछ समस्याएं बड़ी होती है और कुछ छोटी। छोटी–छोटी बातों को समस्या समझना ही नहीं चाहिए। जब कोई परेशानी आए तो ऐसी एक परेशानी या दिक्कत के बारे में सोचिए जो वाकई बहुत गंभीर है और आप भगवान के शुक्र गुजार है कि अभी नहीं हो रहा है। अभी आप किस बात के बारे में बिल्कुल नहीं सोचना चाहते और खुद को क्या अच्छा कहना चाहते हैं ?

जब समस्या से घिरे तो ऐसी बातों के बारे में सोचिए, जिन्हें आप खुद को कहना चाहते हैं। यकीनन ही वह शब्द अच्छे होंगे। इन शब्दों को खुद से जरूर कहिए। ऐसा करने से ताकत मिलेगी और समस्या का हल निकालने का औज़ार भी साबित होगा।

दूसरों का कसूर निकालकर अपनी जिम्मेदारियों से भागेंगे या एक्शन प्लान बनाकर आगे से आगे बढ़ना चाहते हैं?

पहले से समस्या में हैं, आप और समस्या बढ़ाना तो नहीं ही चाहते होंगे। इसलिए दूसरों का कसूर निकालकर अपनी जिम्मेदारियों से भागने की बजाय आगे बढ़ने के बारे में सोचिए। एक अच्छा एक्शन प्लान बनाइए और उस पर चलना शुरू कर दीजिए।

किन लोगों को माफ करना चाहते हैं ?

माफी देने का मतलब परिस्थियों को सुधारना नहीं है। और आप हर व्यक्ति या परिस्थिति को माफ करना या भूलाना भी नहीं चाहते हैं। लेकिन आप हर किसी को माफ करके खुद को आजाद करिए। अपने साथ रहिए। जैसे हैं वैसे ही रहिए और आगे बढ़ते जाइए।

मुस्कान मानवता की

¼ekuo /ke Ük[kyk dk "k"Ve ¼6½ i"i½

ईमानदारी रूपी हीरा

"जो पर कृपा राम की होय, ता पर कृपा करे सब कोई"

तो भैरूजी मिस्त्री साहब ने कृपा की, मेरे को मकान किराये पर दिया और हमने पोस्ट ऑफिस में जून महीने की 16 तारीख को जब जॉईन किया। हमारे कश्यप साहब, मैं उनका आभारी हूँ। अच्छी बिल्डिंग थी, टेलीफोन एक्स्चेंज के पास में, वहाँ गये, उनको कागज दिये। उन्होंने एक लाइन की तरफ इशारा किया, एक अंगुली उधर की। मैंने देखा, मनी ऑर्डर वाले बाबूजी बैठे हैं और उनके आगे 70–75 लोग लम्बी लाइन में खड़े हैं। उन्होंने कहा–जाओ, उनसे चार्ज ले लो और आई.पी.एम. को कहा, इनको मनी ऑर्डर बाबू बना दो। जैसे ही गये मनी ऑर्डर वाले बाबूजी को गाँव जाना था, लो कैलाश जी, सम्भाल लो भाई, ये 11306 रूपया है, ये रसीदें हैं, ये हिसाब है। उस समय जैसे ही एम.ओ. सामने वाला कोई देता था, हम उसको चेक करके रूपया लेते थे। फिर एम.ओ. के पीछे एडवाईज पढ़ते थे कि कितना रूपया कहाँ जायेगा? मन्नी ऑर्डर रसीद देते थे, उससे पहले एक लिस्ट बनती थी। उसमें लिख लेते थे लिस्ट नम्बर, मनी ऑर्डर नम्बर और इतना रूपया, उस रूपये की जोड़ लगती थी, वो रसीद बुक के साथ में शाम को 4–5 बजे जाती थी। ए.पी.एम. साहब को देते थे, वो उनको चेक करते थे। सभी ऑफिस कॉपी सही है कि नहीं है? और उतना रूपया कैशियर के पास जमा कराया जाता था। मैं जब काउंटर पर बैठा तो 70–85 महानुभव और 4–5 घण्टे लगातार लाईन में आते रहे, और भी नये जुड़ते रहे। सिर उठाने की फुर्सत नहीं मिली। अच्छा है, ऐसा ही जीवन होना चाहिये, क्या करना फुर्सत का? शरीर को जैसी आदत डालो, वैसा शरीर हो जाता है। मेहनत की आदत डालेगा तो मेहनत का होगा। मैं नाम नहीं लेना चाहता, पर एक सज्जन थे भीण्डर के, हमारी दुकान पर आकर बैठते थे। 10–11 बजे बैठते थे, 5 बजे चले जाते थे। कुछ भी नहीं करते थे। आदत पड़ गयी थी और उनकी पत्नी चरखा कात करके आती थी, उससे रूपया दो रूपया की कमाई करती थी। कुछ रूपया शायद ब्याजणा दे रखा था। आलसी नहीं बनना है, मैं अपने आप को कहता हूँ। कभी–कभी मैं भी सुस्त हो जाता हूँ, कई बार आलस्य रूपी शत्रु ने मेरे पर भी आक्रमण किया।

पाली–मारवाड़ में दो प्रसंग आप को मैं बताना चाहता हूँ। एक बार मैं सेविंगमेट बाबू था, सेविंगमेट काउंटर पर बैठा था। मेरे पास ही मनीऑर्डर काउंटर पर दूसरे थे। उस समय भी लम्बी लाईन थी। एक आदमी बार–बार आवे और बोले – बाबूजी – बाबूजी, पीछे जाओ, लाईन में खड़े रहो। फिर आवे, बोले–बाबूजी! सुन तो लो। फिर बोला–लाईन में खड़े रहो। फिर कहा–बाबूजी 150/–रूपये का मनी ऑर्डर का फार्म तो मैंने ले लिया। मेरे को रसीद भी दे दी, पर आप पैसा लेना भूल गये और आपने मांगा नहीं तो मैं भी भूल गया। तो मैं भी दौड़ा–दौड़ा आया कि पैसे तो आपने लिये नहीं, बाबूजी, पैसा तो मेरी जेब में ही रह गया। अब आप 150 रूपया ले लो मेरे से नहीं तो शाम को आप अपनी तनख्वाह में से कैसे रखोगे? आप को 233 रूपया महीना मिलता है, 150 रूपये रखोगे तो बच्चे क्या खायेंगे? इस लिये मैं बार–बार आ रहा हूँ, आप मेरे से 150 रूपया ले लीजिये। कितनी ईमानदारी , 'ऑनेस्टी इज द बेस्ट पॉलिसी और उन बाबूजी से रूपया लिया, गल्ले में डाला। धन्यवाद भी नहीं दिया, कुछ भी नहीं कहा और दूसरे से बात करने लग गये। मैंने कहा–आप इनको धन्यवाद तो दे दीजिये। फिर मैंने उनको धन्यवाद दिया कि आपका बहुत आभार–भाईसाहब, आप तो सत्य के व्यक्ति हैं। ईमानदारी 100 मनकों में चमकने वाला बहुमूल्य कोहिनूर हीरा है। सत्यता और ईमानदारी दो चीज, विनम्रता, विवेक। विवेक होता है तो ईमानदारी भी आ जाती है। विवेक क्या अच्छा क्या बुरा? क्या करना चाहिये? क्या नहीं करना चाहिये? विवेक होता है तो भारत का लाड़ला रहकर खुद को आनन्दित करता है, परिवार को आनन्दित करता है राष्ट्र और विश्व आनन्दित होता है। जो विश्व के किसी भी देश में, कोई प्रधानमंत्री अन्य छोटे राज्यों की मदद करता है तो विश्व राजी होता है–बाबू।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी-कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक-प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका-कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक-सोहन लाल गाडरी
संपादक-लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी-घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक-न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक-कमलादेवी, मुद्रण स्थल-13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर-3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल- ई-डी-71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर-6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक-लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. - 0294–6622222 मो.-09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com